सूरह — एक कहानी

सूरह अर-रूम

रोम

पूरा सफ़र — एक पेशगोई, और तुम्हारे अपने घर में निशानियाँ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 30 • 60 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

ग़ुलिबतिर्-रूम। फ़ी अद्नल्-अर्ज़ि व हुम्-मिम्-ब'अ्दि ग़लबिहिम स-यग़्लिबून
2-3. रोम हार गए। क़रीबी ज़मीन में, और वो अपनी हार के बाद ग़ालिब आएँगे।

यअ्लमून ज़ाहिरम्-मिनल्-हयातिद्-दुन्या व हुम 'अनिल्-आख़िरति हुम ग़ाफ़िलून
7. वो दुनिया की ज़िंदगी का ज़ाहिरी जानते हैं, और आख़िरत से वो ग़ाफ़िल हैं।

व मिन आयातिही अन ख़लक़ लकुम्-मिन अन्फ़ुसिकुम अज़्वाजल्-लि-तस्कुनू इलैहा व ज'अल बैनकुम्-मवद्दतंव्-व रहमह
21. और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए ताकि तुम उनमें सुकून पाओ, और तुम्हारे दरमियान मोहब्बत और रहमत रख दी।

फ़ितरतल्-लाहिल्-लती फ़तरन्-नास 'अलैहा
30. अल्लाह की वो फ़ितरत जिसपर उसने लोगों को बनाया।

ज़हरल्-फ़सादु फ़िल्-बर्रि वल्-बह्रि बिमा कसबत ऐदिन्-नास
41. ख़ुश्की और समंदर में फ़साद ज़ाहिर हो गया उस से जो लोगों के हाथों ने कमाया।

अल्लाहुल्-लज़ी ख़लक़कुम्-मिन ज़अ्फ़िन सुम्म ज'अल मिम्-ब'अ्दि ज़अ्फ़िन क़ुव्वह
54. अल्लाह वही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से बनाया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त दी।

एक मीआद वाली पेशगोई

बेटा, ये सूरह एक ऐसी चीज़ से खुलती है जिसकी कोशिश कोई दूसरी किताब नहीं करती: दो सल्तनतों की जंग के बारे में एक ख़ास पेशगोई, एक वक़्त की हद के साथ — ठीक उस वक़्त की गई जब ये ना-मुमकिन लग रहा था।

'**अलिफ़ लाम मीम। ग़ुलिबतिर्-रूम** — **रोम हार गए** — **फ़ी अद्नल्-अर्ज़ि** — **क़रीबी** ज़मीन में — **व हुम्-मिम्-ब'अ्दि ग़लबिहिम स-यग़्लिबून** — **और वो, अपनी हार के बाद, ग़ालिब आएँगे** — **फ़ी बिज़्'इ सिनीन** — **चंद सालों** में।'

बेटा, ये रहा पस-मंज़र। उस दुनिया पर दो सुपर-ताक़तें छाई थीं: बीज़ेंटाइन (जिन्हें

'अर-रूम' कहा गया), जो अहल-ए-किताब थे, और फ़ारसी, जो आतिश-परस्त थे। फ़ारसियों ने बीज़ेंटाइन को कुचल दिया और उनके इलाक़े ले लिए। मक्का के बुत-परस्त ख़ुश हुए — क्योंकि फ़ारसी, जिनके पास कोई किताब न थी, उन लोगों को हरा चुके थे जिनके पास थी। उन्होंने मुसलमानों को चिढ़ाया: अहल-ए-किताब में तुम्हारे हलीफ़ हार गए, और हम तुम्हें इसी तरह हराएँगे।

और ये आयतें उतरीं: वो फिर जीतेंगे, 'बिज़्'इ सिनीन' में — एक ऐसी मिक़्दार जो अरबी में तीन से नौ साल के दरमियान होती है।

बेटा, ये एक हैरत-अंगेज़ दावा था। बीज़ेंटाइन सल्तनत उस वक़्त टूट चुकी थी; उसका पाया-तख़्त ख़तरे में था; उसका ख़ज़ाना ख़ाली था। उस दौर के मुअर्रिख़ उसकी हालत को ना-उम्मीद बयान करते हैं।

अबू बक्र (रज़ि0) निकले और क़ुरैश से इसपर खुले-आम शर्त बाँधी — ये सट्टे की मुमानअत से पहले था — और उन्होंने नबी ﷺ के मशवरे पर मुद्दत तक बढ़ाई ताकि महफ़ूज़ रहें।

और उस विंडो के अंदर, बेटा, बीज़ेंटाइन ने फ़ारसियों को क़त'ई तौर पर हराया। और पेशगोई का दूसरा हिस्सा उसी दिन पूरा हुआ, जैसा कई रिवायात कहती हैं: बीज़ेंटाइन की फ़तह की ख़बर मुसलमानों तक बद्र की जंग के क़रीब पहुँची।

'**व यौम-इज़िंय्यफ़्रहुल्-मुअ्मिनून** — **और उस दिन मोमिनीन ख़ुश होंगे** — **बि-नस्रिल्-लाह** — **अल्लाह की मदद** पर — **यन्सुरु मंय्यशा** — वो जिसे चाहे फ़तह देता है — **व हुवल्-'अज़ीज़ुर्-रहीम** — और वो ग़ालिब, रहीम है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: एक दूर की सल्तनत की फ़तह तक 'नस्रुल्लाह' — अल्लाह की मदद — कहलाई। **ये सब उनका इंतेज़ाम है, खिलाड़ी जो भी हों।**

'**व'अ्दल्-लाह** — ये **अल्लाह का वादा** है — **ला युख़्लिफ़ुल्-लाहु व'अ्दह** — अल्लाह अपने वादे में ख़िलाफ़-वर्ज़ी नहीं करता — **व लाकिन्न अक्सरन्-नासि ला यअ्लमून** — मगर ज़्यादा तर लोग नहीं जानते।'

वो सिर्फ़ सतह जानते हैं

और फिर, बेटा, ज़्यादा तर इंसानियत का एक ऐसा बयान आता है जो आज पहले से कहीं ज़्यादा ठीक है:

'यअ्लमून ज़ाहिरम्-मिनल्-हयातिद्-दुन्या — वो दुनिया की ज़िंदगी का ज़ाहिरी जानते हैं — व हुम 'अनिल्-आख़िरति हुम ग़ाफ़िलून — और आख़िरत से वो ग़ाफ़िल हैं।'

बेटा, '**ज़ाहिरन**' — **सतह**, बाहरी तह। वो इस ज़िंदगी के बाहर के माहिर हैं: कैसे कमाना, कैसे बनाना, कैसे सफ़र करना, कैसे बीमारी का इलाज करना, कैसे ज़र्रा तोड़ना। गहरा और मुतअस्सिर-कुन इल्म — ये सब छिलके के बारे में।

और उसके बाद क्या आता है — ये सब कहाँ जा रहा है, और ये क्यों मौजूद है — 'ग़ाफ़िलून', बिल्कुल बे-ख़बर।

बेटा, एक आदमी का सोचो जो एक घर का बरसों मुताला करता है: उसका रंग, उसकी वायरिंग, उसकी मार्केट क़ीमत — और कभी एक बार भी ये नहीं सोचता कि इसका मालिक कौन है या उसे इस में रहने की इजाज़त क्यों मिली। **यही आयत है।**

'**अ व लम यतफ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम** — क्या उन्होंने **अपने अंदर ग़ौर** नहीं किया? **मा ख़लक़ल्-लाहुस्-समावाति वल्-अर्ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्-हक़्क़ि व अजलिम्-मुसम्मा** — अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन और जो उन के दरमियान है **हक़** और एक **मुक़र्रर मुद्दत** के बग़ैर नहीं बनाया।'

और फिर तारीख़ पढ़ने वाले हर शख़्स के लिए एक नसीहत: '**अ व लम यसीरू फ़िल्-अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कैफ़ काना 'आक़िबतुल्-लज़ीन मिन क़ब्लिहिम** — क्या उन्होंने ज़मीन में **सफ़र** नहीं किया और **देखा** कि उन से पहलों का **अंजाम** कैसा हुआ? **कानू अशद्द मिन्हुम क़ुव्वतंव्** — **वो उन से ताक़त में ज़्यादा थे** — **व असारूल्-अर्ज़ व 'अमरूहा अक्सर मिम्मा 'अमरूहा** — और उन्होंने ज़मीन को **जोता** और इसे **इन से ज़्यादा** आबाद किया।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: पहली क़ौमें उन से **ज़्यादा** आबाद करती थीं जिन्हें मुख़ातिब किया जा रहा है। तो वो खंडहर जिन्हें आप सैलानी के तौर पर देखते हैं कभी उस

शहर से ज़्यादा तरक़्क़ी-याफ़्ता थे जिसमें आप रहते हैं। और अल्लाह उनके बारे में फ़रमाते हैं: '**व मा कानल्-लाहु लि-यज़्लिमहुम व लाकिन कानू अन्फ़ुसहुम यज़्लिमून** — अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म न किया, बल्कि वो ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।'

तुम्हारे अपने घर में निशानियाँ

और अब, बेटा, इस सूरह का दिल: आयतों का एक सिलसिला जिनमें से हर एक '**व मिन आयातिही**' से शुरू होती है — **और उसकी निशानियों में से।** अल्लाह अपने वुजूद का सबूत गिनाते हैं, और वो सितारों से शुरू नहीं करते।

'**व मिन आयातिही अन ख़लक़कुम्-मिन तुराबिन सुम्म इज़ा अन्तुम बशरुन तन्तशिरून** — और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें **मिट्टी** से बनाया, और फिर अचानक तुम **इंसान** हो, **फैलते** हुए।'

और फिर, बेटा, एक आयत जो हर शादी में और हर मुश्किल निकाह में पढ़ी जानी चाहिए:

'**व मिन आयातिही अन ख़लक़ लकुम्-मिन अन्फ़ुसिकुम अज़्वाजल्-लि-तस्कुनू इलैहा — और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए ताकि तुम उनमें सुकून पाओ — व ज'अल बैनकुम्-मवद्दतंव्-व रहमह — और तुम्हारे दरमियान मोहब्बत और रहमत रख दी — इन्न फ़ी ज़ालिक ल-आयातिल्-लि-क़ौमिंय्यतफ़क्करून** — बेशक, इस में ग़ौर करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।'

बेटा, इसे खोल कर देखिए, क्योंकि इस के अंदर निकाह का पूरा फ़ल्सफ़ा है।

पहले — मक़्सद: 'लि-तस्कुनू इलैहा' — ताकि तुम उस में **सुकून** पाओ। सुकून ठहराव है, आराम, एक बे-चैन चीज़ का ठहर जाना। तो क़ुरआन में निकाह का पहला मक़्सद दौलत नहीं, हैसियत नहीं, औलाद तक नहीं — **ये है कि दो लोग एक दूसरे के लिए आराम की जगह बन जाएँ।** बेटा, ख़ुद से पूछिए: क्या आपका घर एक ऐसी जगह है जहाँ आपके घरवाले साँस ले सकें?

दूसरे — दो चीज़ें जो अल्लाह उनके दरमियान **रखते** हैं: 'मवद्दह व रहमह'। 'मवद्दह' मोहब्बत और चाहत और किसी में ख़ुशी है। 'रहमह' रहमत है — नर्मी, माफ़ी, किसी की कमज़ोरी की परवाह।

और बेटा, उलमा ने इस जोड़े की हिकमत ग़ौर की। मवद्दह शुरू में सब से मज़बूत होती है; ये कशिश की आग है। रहमह वो है जो साल गुज़रने के साथ बढ़ती और ग़ालिब आती है, जब जिस्म बड़े होते और ख़िज़ावटें जमा होती हैं। **मोहब्बत ठंडी पड़ सकती है; रहमत थामे रखती है।** एक निकाह जो सिर्फ़ मवद्दह पर चले ज़िंदा न रहेगा; एक जो रहमह उठाए उम्र-भर चलता है।

तीसरे — ग़ौर कीजिए: '**ज'अल** बैनकुम' — उसने इसे तुम्हारे दरमियान **रखा**। घर की मोहब्बत महज़ केमिस्ट्री या क़िस्मत नहीं। ये एक ऐसी चीज़ है जो अल्लाह वहाँ रखते हैं — **जिसका मतलब है ये एक ऐसी चीज़ है जो आपको उन से माँगनी चाहिए, और जिसे वो बहाल कर सकते हैं जब वो धुँधला जाए।**

'**व मिन आयातिही ख़ल्क़ुस्-समावाति वल्-अर्ज़ि वख़्तिलाफ़ु अल्सिनतिकुम व अल्वानिकुम** — और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़, औ र **तुम्हारी ज़ुबानों और तुम्हारे रंगों का तनव्वो**' है — **इन्न फ़ी ज़ालिक ल-आयातिल्-लिल्-'आलिमीन** — बेशक, इस में **इल्म** वालों के लिए निशानियाँ हैं।'

बेटा, ग़ौर से ग़ौर कीजिए: ज़ुबान और रंग के फ़र्क़ **अल्लाह की निशानियों** के तौर पर गिनाए गए, उसी फ़ेहरिस्त में जिसमें आसमानों की तख़्लीक़। हल करने वाले मसाइल के तौर पर नहीं, लोगों को दर्जा देने की बुनियाद के तौर पर नहीं — उसकी तख़्लीक़ी ताक़त के सबूत के तौर पर। **जो शख़्स दूसरे के रंग को हक़ीर समझता है वो उस चीज़ को हक़ीर समझ रहा है जिसे क़ुरआन एक आयत कहता है।**

'**व मिन आयातिही मनामुकुम बिल्-लैलि वन्-नहारि वब्तिग़ाउकुम मिन फ़ज़्लिह** — और उसकी निशानियों में से रात और दिन तुम्हारी **नींद** और उसके फ़ज़्ल की तलाश है।' बेटा, तुम्हारी नींद तक सबूत के तौर पर गिनाई गई।

फ़ितरत

और अब, बेटा, इंसानी फ़ितरत के बारे में क़ुरआन की सब से अहम आयतों में से एक:

'**फ़-अक़िम वज्हक लिद्-दीनि हनीफ़ा** — **तो अपना चेहरा** दीन की तरफ़ **सीधा करो**, हक़ की तरफ़ **माइल** — **फ़ितरतल्-लाहिल्-लती फ़तरन्-नास 'अलैहा** — **अल्लाह की वो फ़ितरत जिसपर उसने (तमाम) लोगों को बनाया** — **ला तब्दील लि-ख़ल्क़िल्-लाह** — अल्लाह की तख़्लीक़ में **कोई तब्दीली** नहीं — **ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिम** — **यही सीधा दीन** है — **व लाकिन्न अक्सरन्-नासि ला यअ्लमून** — मगर ज़्यादा तर लोग नहीं जानते।'

बेटा, '**फ़ितरह**' वो अस्ली रुझान है जो अल्लाह ने हर इंसान में डाला — ये क़ुदरती मैल के एक ख़ालिक़ है, और सही-ग़लत का क़ुदरती एहसास।

नबी ﷺ ने इसे समझाया: हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है, और फिर उसके माँ-बाप उसे यहूदी, ईसाई या मजूसी बना देते हैं। फिर आपने ﷺ एक ख़ूबसूरत मुक़ाबला दिया: एक जानवर एक पूरा, मुकम्मल बच्चा जनता है — क्या तुम उसे पैदाइश पर **कटा-फटा** पाते हो? **नुक़सान बाद में होता है।**

बेटा, इसका मतलब गहरा है। इस्लाम को एक ऐसी चीज़ के तौर पर पेश नहीं किया जाता जो बाहर की हो और आप में डाली जा रही हो। इसे **आपकी अस्ली सेटिंग** के तौर पर पेश किया जाता है — जो आप पहले से थे उस से पहले कि दुनिया ने उस पर लिख दिया।

इसी लिए एक शख़्स जो बरसों अल्लाह से दूर रहा और फिर लौट आया अक्सर इसे 'घर आना' बयान करता है, न कि किसी नई चीज़ को अपनाना। **उस में किसी चीज़ ने इसे पहचान लिया।**

और ये भी समझाता है कि हर इंसानी मुआशरा, चाहे कितना ही अलग-थलग हो, क्यों इबादत का, किसी बुलंद ताक़त के शुक्र का, भलाई और बुराई का कोई न कोई तसव्वुर क़ायम कर लेता है। ये फ़ितरत है जो फूट कर सामने आती है।

तो हुक्म है: 'अक़िम वज्हक' — अपना चेहरा इसकी तरफ़ **सीधा** करो। बेटा, फ़ितरत एक क़ुत्ब-नुमा है, मगर एक क़ुत्ब-नुमा शोर में दबाया जा सकता है। **अपना चेहरा**

दीन की तरफ़ सीधा करना सिर्फ़ उस चीज़ को हटाना है जो अस्ल के ऊपर लिख दी गई।

फ़साद ज़ाहिर हो गया

और फिर, बेटा, दुनिया की हालत के बारे में एक आयत जो यूँ पढ़ती है गोया ये आज सुब्ह उतरी हो:

'ज़हरल्-फ़सादु फ़िल्-बर्रि वल्-बहि बिमा कसबत ऐदिन्-नास — ख़ुश्की और समंदर में फ़साद ज़ाहिर हो गया उस से जो लोगों के हाथों ने कमाया — लि-युज़ीक़हुम-ब'अ्ज़ल्-लज़ी 'अमिलू ल'अल्लहुम यर्जिऊन — ताकि वो उन्हें उस का कुछ हिस्सा चखाए जो उन्होंने किया, ताकि शायद वो लौट आएँ।'

बेटा, 'फ़साद' का मतलब बिगाड़, ख़राबी, किसी दुरुस्त चीज़ की तबाही। और अल्लाह वजह नाम लेते हैं: 'बिमा कसबत ऐदिन्-नास' — जो इंसानी हाथों ने कमाया।

उलमा ने इसे दोनों को ढाँपने वाला समझाया — अख़्लाक़ी फ़साद — ना-इंसाफ़ी, ज़ुल्म, अल्लाह की हुदूद का तोड़ना — और दुनिया की जिस्मानी ख़राबी जो इंसानी लालच से आती है। बेटा, ज़हरीले दरिया, ख़ाली समंदर, गंदी हवा, तबाह मिट्टी देखिए। आयत ख़ास तौर पर ख़ुश्की और समंदर दोनों का नाम लेती है।

और मक़्सद फिर ग़ौर कीजिए — वही जुमला जो हमने अस-सजदह में देखा: 'ल'अल्लहुम यर्जिऊन', ताकि शायद वो **लौट** आएँ। नुक़सान तक एक जगाने वाले अलार्म के तौर पर बनाया गया। अल्लाह हमें उस चीज़ का **कुछ** हिस्सा चखाते हैं, पूरा नहीं — 'ब'अ्ज़ल्-लज़ी 'अमिलू' — ताकि हमारे पास अभी वापस मुड़ने की गुंजाइश रहे।

'क़ुल सीरू फ़िल्-अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कैफ़ काना 'आक़िबतुल्-लज़ीन मिन क़ब्लु — कहो: ज़मीन में सफ़र करो और देखो कि पहलों का अंजाम कैसा हुआ।'

कमज़ोरी, ताक़त, कमज़ोरी

फिर सूरह एक इंसानी ज़िंदगी का कभी लिखा गया सब से आजिज़-कुन बयान देती है:

'**अल्लाहुल्-लज़ी ख़लक़कुम्-मिन ज़अ्फ़िन** — **अल्लाह वही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से बनाया** — **सुम्म ज'अल मिम्-ब'अ्दि ज़अ्फ़िन क़ुव्वह** — **फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त दी** — **सुम्म ज'अल मिम्-ब'अ्दि क़ुव्वतिन ज़अ्फ़ंव्-व शैबह** — **फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और सफ़ेद बाल** दिए — **यख़्लुक़ु मा यशा** — वो जो चाहे बनाता है — **व हुवल्-'अलीमुल्-क़दीर** — और वो जानने वाला, क़ादिर है।'

बेटा, ये रही आपकी पूरी ज़िंदगी एक आयत में। आप अपना ही सर न उठा सकते हुए आते हैं। फिर, बीच में चंद दहाइयों के लिए, आप तक़रीबन कुछ भी उठा सकते हैं — और ठीक उन्हीं दहाइयों में, ज़्यादा तर लोग भूल जाते हैं कि वो कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं। और फिर, नर्मी से, ताक़त फिर खींच ली जाती है, और सफ़ेद बाल ज़ाहिर होते हैं, और आपको उन चीज़ों में मदद चाहिए जिनमें एक बच्चे को मदद चाहिए।

बेटा, **बीच की ताक़त एक उधार है, एक मिल्कियत नहीं।** ये कमज़ोरी के बाद दी गई और ये कमज़ोरी में वापस ले ली जाएगी। इसे इस्तेमाल कीजिए जब तक ये आपके हाथों में है।

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, एक ऐसी दुनिया में हक़ उठाए हर शख़्स के लिए एक हिदायत से जो इसे नहीं चाहती:

'**फ़स्बिर इन्न व'अ्दल्-लाहि हक़्क़** — **तो सब्र करो; बेशक, अल्लाह का वादा सच्चा है** — **व ला यस्तख़िफ़्फ़न्नकल्-लज़ीन ला यूक़िनून** — **और वो लोग जिन्हें कोई यक़ीन नहीं तुम्हें बे-क़रार, डगमगा** न दें, या हल्का न कर दें।'

बेटा, इस सूरह के लिए क्या आख़िरी लाइन। 'ला यस्तख़िफ़्फ़न्नक' — उन्हें तुम्हें हल्का, बे-क़रार, आसानी से हिलने वाला मत बनाने दो।

क्योंकि ठीक यही होता है: वो लोग जिनके पास अपना कोई यक़ीन नहीं अक्सर सब से ऊँची आवाज़ वाले होते हैं, और उनका ए'तिमाद उस शख़्स को हिला सकता है

जिसके पास वाक़ई हक़ है। आप अपनी नमाज़ के लिए माफ़ी माँगने लगते हो, अपने अक़ीदे को नरम करने, अजीब लगने से बचने के लिए साथ में हँसने लगते हो।

और अल्लाह अपने रसूल ﷺ से, और उनके ज़रिए आपसे कहते हैं: सब्र करो, वादा सच्चा है — **और उन लोगों को जिन्हें किसी चीज़ का यक़ीन नहीं उस शख़्स को डगमगाने मत दो जिसे अल्लाह का यक़ीन है।**

बेटा, और याद रखिए ये सूरह कैसे शुरू हुई: एक ऐसी पेशगोई से जो ना-मुमकिन लगती थी, एक ना-उम्मीद साल में की गई, और ठीक ठीक पूरी हुई। **यही आपका सबूत है कि आख़िर में दिया गया वादा इंतेज़ार के लायक़ है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह ने एक ना-मुमकिन नतीजा सालों पहले एलान किया, और वो वक़्त पर हो गया — उसका वादा एक उम्मीद नहीं, एक रिकॉर्ड है।

2. ज़्यादा तर लोग इस ज़िंदगी की सतह के माहिर हैं और इस बात से बे-ख़बर कि ये किस लिए है।

3. क़ुरआन में निकाह का मक़्सद सुकून है — पूछो क्या तुम्हारा घर एक ऐसी जगह है जहाँ तुम्हारे घरवाले साँस ले सकें।

4. मवद्दह धुँधलाती और रहमह बढ़ती है: रहमत से चलने वाला निकाह कशिश पर चलने वाले से ज़्यादा चलता है — और अल्लाह दोनों रखते हैं, तो उन से माँगो।

5. ज़ुबान और रंग के फ़र्क़ उसकी निशानियों में गिनाए गए — कभी उसके मसाइल में नहीं।

6. इस्लाम तुम्हारी अस्ली सेटिंग है, कोई बाहरी चीज़ नहीं: फ़ितरत शोर के नीचे दबा हुआ क़ुत्ब-नुमा है।

7. तुम्हारी ताक़त दो कमज़ोरियों के दरमियान एक उधार है — और उन लोगों को जिन्हें किसी चीज़ का यक़ीन नहीं तुम्हें कभी डगमगाने मत दो।

या अल्लाह, हमारे घरों में मवद्दह और रहमह रखिए, हमें अपनी फ़ितरत की तरफ़ लौटाइए, और हमें उन के दरमियान साबित-क़दम रखिए जिन्हें कोई यक़ीन नहीं। आमीन।